

## नारायणपुर महाविद्यालय में "एक पेड़ मां के नाम" किया पौधारोपण\*

दिनांक 11.07.2024

शासकीय स्वामी आत्मानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय नारायणपुर में एक पेड़ मां के नाम अभियान चलाया गया, देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा पर्यावरण को बचाने के लिए मन की बात के 111 एपिसोड में विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर एक पेड़ मां के नाम अभियान शुरू किया गया है। इस दौरान प्रधानमंत्री ने सभी लोगों से एक पेड़ अपनी मां के नाम पर जरूर लगाने की अपील की। आप सभी जानते हैं कि दुनिया का सबसे अनमोल रिश्ता मां का होता है हम सबके सामने हम सबके जीवन में मां का दर्जा सबसे ऊंचा होता है। मां हर दुःख सहकर अपने बच्चों का पालन पोषण स्नेह लुटाती है। जन्मदात्री मां का ये प्यार हम सब पर एक कर्ज की तरह होता है, जिसे कोई चुका नहीं सकता।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मंशानुरूप शासकीय स्वामी आत्मानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों ने एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत प्राचार्य डॉ. एस. आर. कुंजाम के मार्गदर्शन में महाविद्यालय परिसर में अपने मां के नाम पौधे का वृक्षारोपण किया गया इस अभियान में आम, नीम, अमरूद, बेल के साथ अन्य प्रजातियों के 115 पौधे लगाए गए। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण योगदान है। इस अवसर पर महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक एवं जिला संगठक रासेयों श्री बी. डी. चांडक ने कहा कि पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए पेड़ पौधे जरूरी है। यह हमें जीवन के लिए ऑक्सीजन, खाने के लिए फल और गर्मी में छांव देते हैं। धरती को हरा-भरा करने एवं जीवन को बचाने के लिए सबको पौधारोपण करने का संकल्प लेने की जरूरत है। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी श्री विकास चंद्र विशाल ने कहा कि वृक्षारोपण से प्रदूषण कम होता है जिसमें आने वाली पीढ़ियों का जीवन अधिक सुरक्षित होता है इसलिए वृक्षारोपण अधिक से अधिक कर उसे संरक्षित करने का प्रयास करना चाहिए। श्री राजेंद्र कुमार यादव वरिष्ठ प्राध्यापक ने कहा कि प्रकृति के संरक्षण की जरूरत आन पड़ी है, बिना प्रकृति के हमारा जीवन संभव ही नहीं है, जैसे प्रकृति हमारी रक्षा करती है, आइए हम भी उसकी रक्षा करें। साथ ही साथ महाविद्यालय के अमृत वाटिका में 20 पौधों का वृक्षारोपण एवं संरक्षित करने का संकल्प दिलाया गया। इस कार्यक्रम में वन विभाग के अधिकारी कर्मचारी एवं महाविद्यालय के अधिकारी कर्मचारी के साथ-साथ स्वयंसेवकों की भागीदारी हुई।



